Bihar Board Class 7 Social Science History Notes Chapter 5 शक्ति के प्रतीक के रूप में वास्तुकला, किले एवं धर्मिक स्थल

पाठ का सार संक्षेप

महल हो या मंदिर इन सबका बनना समय की सम्पन्नता के सचक होते हैं। जब साधारण किसान. या व्यापारी को धन होता है तो वह अपना घर बनवाता है । वैसे ही राजाओं और बादशाहों द्वारा निर्मित महल, किला और मंदिर उनकी सम्पन्नता के सूचक हैं। ऐसे निर्माणों से कारीगरों को रोजी मिलती ही है, कला-कौशल जीवित रहता है । मध्यकालीन शासकों ने स्थापत्य कला के बेहतरीन नमूने प्रस्तुत किए।

आठवीं से अठारहवीं शताब्दी के बीच विभिन्न शैलियों में विभिन्न इमारतें, किले, मंदिर, मस्जिद और मकबरे बने । आठवीं से तेरहवीं सदी के बीच जो मंदिर बने वे सभी नगर और द्राविड़ नामक दो शैलियों में बने । उड़ीसा में जगन्नाथ मंदिर, सूर्य मंदिर, मध्य प्रदेश में खजुराहो मंदिर अपनी सभ्यता और सुन्दरता में सानी नहीं रखते । ये मंदिर नागर शैली के हैं। ऊपरी शीर्ष को शिखर कहा जाता है । मंदिर के केंद्रीय भाग प्रमुख देवता के लिए होता था, जिसे गर्भ गृह कहा जाता है ।

कोणार्क का सूर्य मंदिर रथ के आकार का है । वह इसलिये कि सूर्य अपने रथ पर ही घूमते हैं, जिनमें सात घोड़े जुते रहते हैं। इस मंदिर में भी रथ के पहिये तथा सात घोडों का आकार उकेरित है।

तेरहवीं से सोलहवीं सदी के बीच, मुस्लिम शासकों द्वारा इमारतों का निर्माण हुआ। ये शासक तुर्क और अफगान थे । सर्वप्रथम इन्होंने अपने रहने के लिए भवन बनवाये । बाद में उपासना हेतु मस्जिदों का निर्माण कराया ।

इन्होंने पहले से मौजूद कुछ मंदिरों को तोड़कर मस्जिदों में परिवर्तित किया । तुर्क-अफगानों ने पहली मस्जिद कुतुबमीनार परिसर में बनाया, जिसका नाम कुव्वत-उल-इस्लाम रखा । इस काल की शैली में परिवर्तन के साथ ही सामग्री में भी बदलाव आए । हिन्दू मंदिर और किले जहाँ पत्थरों को तराशकर बनाए जाते थे वहीं अब ईंट का उपयोग होने लगा। चूना और सूर्जी के मिश्रण से गारा बनाया जाता था ।

कुतुबमीनार के प्रवेश द्वार 'अलाई दरवाजा' को बनाने में पूर्णतः वैज्ञानिक विधि अपनाई गई। तुगलककालीन स्थापत्य कला में गयासुद्दीन का मकबरा में एक नई शैली का इजाद हुआ । इस काल के इमारत ऊँचे चबूतरे पर बनाये जाते थे ।

जैसे-जैसे दिल्ली सल्तनत कमजोर होता गया, वैसे-वैसे कारीगर इध र-उधर बिखरते गये। अब स्थानीय शासकों ने भवन बनवाये । जौनपुर की 'आटाला मस्जिद' इसी का प्रमाण है । जौनपुर के अलावा गुजरात, बंगाल और मालवा के स्थानीय शासकों ने कला को काफी संरक्षण दिया। बिहार में भी तुर्क-अफगान शैली में 'इमारतों का निर्माण

https://www.evidyarthi.in/

हुआ । बिहार शरीफ का मलिक इब्राहिम का मकबरा, तेलहरा की मस्जिद, बेगुहजाम की मस्जिद उसी कला के नमूने हैं।

आगे चलकर मुगल काल में अनेक इमारतें बनीं । मुगलों ने भव्य महलों, किलों, विशाल द्वारों, मस्जिदों एवं बागों का निर्माण कराया । बाबर ने चार बाग की योजना बनाई थी। उसके वंशजों ने उसे कार्य रूप में परिणत किया । कुछ सर्वाधिक सुन्दर बागों में कश्मीर, आगरा, दिल्ली आदि में जहाँगीर और शाहजहाँ के बनवार्य बाग हैं ।

अकबर द्वारा बनवाई इमारतों में इस्लामिक, हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा स्थानीय वास्तुशैलियों को प्रश्रय दिया गया । उसने आगरा तथा फतहपुर सिकरी में किले और महलों का निर्माण कराया । उसका बनवाया बुलन्द दरवाजा उसी समय की स्थापत्य कला का एक बेजोड़ नमूना है । हुमायूँ का मकबरा संगमरमर का बना है । एमतादुदौला के मकबरा में पहली बार 'पितरादूरा' का उपयोग हुआ ।

शाहजहाँ का शासन काल, भव्य इमारतों का काल था । शाहजहाँ ने पितरादूरा का उपयोग खूब किया । ताजमहल की गिनती विश्व के सात आश्चर्यों में होती है। शाहजहाँ ने दिल्ली और आगरे में लाल किले का निर्माण कराया । शाहजहाँ के काल में निर्माण कार्य अनवरत रूप में चलते रहे । ताजमहल में सिंहासन के पीछे 'पितरादूरा' उकेरित है ।

औरंगजेब के शासन काल में निर्माण कार्य ठप रहा । उसने लाल किला में मोती मस्जिद बनवाई । औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में उसने अपनी पत्नी का मकबरा बनवाया जो 'बीबी का मकबरा' के नाम से प्रसिद्ध है।

बिहार में भी मुगलकालीन शैली का नमूना है । वह है मनेर स्थित शाह दौलत का मकबरा, जो 1617 में बना । इसमें अकबरकालीन मुगल शैली की विशेषताएँ स्पष्ट देखी जा सकती हैं । अवध के नवाबों ने भी अनेक भवन बनवाए जिसमें 'भुलभुलैया' काफी प्रसिद्ध है।

बिहार के भवनों में शेरशाह का मकबरा भी बहुत प्रसिद्ध है। यह एक झील के बीच में बना अष्टकोणीय इमारत अफगान वास्तुकला की कहानी कह रहा है। यह 1545 में पूरी तरह बनकर तैयार हो गया था । शायद शेरशाह को अपने उत्तराधिकारियों की योग्यता का विश्वास नहीं था । इसलिए उसने अपना मकबरा अपने जीवन काल में ही बनवा लिया था ।

https://www.evidyarthi.in/